भारत - जापान संबंध

भारत और जापान के बीच मैत्री का एक लंबा इतिहास है जो आध्यात्मिक सोच में समानता तथा मजबूत सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत रिश्तों पर आधारित है। दोनों आधुनिक देशों ने पुराने संबंध की सकारात्मक विरासत को जारी रखा है जो लोकतंत्र, व्यक्तिगत आजादी तथा कानून के शासन में विश्वास के साझे मूल्यों से सुदृढ़ हुआ है। वर्षों से दोनों देशों ने इन मूल्यों को सुदृढ़ किया है तथा सिद्धांत एवं व्यवहार दोनों के आधार पर एक साझेदारी का निर्माण किया है। आज भारत एशिया में सबसे बड़ा लोकतंत्र है तथा जापान एशिया का सबसे खुशहाल देश है।

जापान के साथ भारत का सबसे पुराना प्रलेखित सीधा संपर्क नारा में तुडाइजी मंदिर था, जहां 752 ईस्वी सन में भारतीय बौद्ध भिक्षु बोधिसेना द्वारा गगनचुंबी भगवान बुद्ध की प्रतिमा का अभिषेक किया गया। समकालीन समय में, जापान से निकटता से जुड़े अन्य भारतीयों में हिंदू धर्म गुरू स्वामी विवेकानंद, नोबल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर, उद्योगपति जे आर डी टाटा, स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस और न्यायाधीश राधा बिनोद पाल महत्वपूर्ण हैं। 1903 में, भारत - जापान संघ का गठन किया गया तथा आज यह जापान में सबसे पुरानी अंतर्राष्ट्रीय मैत्री संस्थाओं में से एक है।

कोई 1400 साल पहले, भारत और जापान के बीच आरंभ हुए सभ्यतागत संपर्कों के बाद इतिहास के विभिन्न चरणों के दौरान दोनों देशों के कभी प्रतिकूलताएं नहीं रहीं हैं। द्विपक्षीय संबंध किसी प्रकार के विवाद - वैचारिक, सांस्कृतिक या भौगोलिक - से बिल्कुल मुक्त रहे हैं। संबंध अनोखा है तथा एक - दूसरे के प्रति सम्मान उदार भावनाओं एवं भंगिमाओं में प्रकट होता है तथा दोनों देश हमेशा जरूरत के समय एक - दूसरे के साथ देते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत ने सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग नहीं लिया परंतु जापान की संप्रभुता के पूरी तरह बहाल होने के बाद 1952 में जापान में अलग से शांति संधि की जो द्विपक्षीय संबंधों में एक निर्णायक क्षण था तथा भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया। युद्ध अपराध अधिकरण में न्यायाधीश राधा बिनोद पाल की असहमति व्यक्त करने वाली अकेली आवाज ने जापान की जनता के बीच गहरा सद्भाव किया जो आज भी सुनाई देती है।

राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद पहले दशक में उच्च स्तर पर अनेक आदान - प्रदान हुए जिसमें जापान के प्रधानमंत्री नोबुसुके किशी की 1957 में भारत यात्रा, प्रधानमंत्री पंडित नेहरू की उसी साल (दो हाथियों के उपहार के साथ) टोकियो की वापसी यात्रा तथा 1958 में राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद की यात्रा शामिल है। 1960 में जापान के तत्कालीन क्राउन प्रिंस महामहिम अकिहितो एवं क्राउन प्रिंसेस मिचिको की यात्रा से संबंध एक नई ऊंचाई पर पहुंचे।

तथापि, अगले दशकों में, द्विपक्षीय संबंधों की गति बहुत हद तक कायम नहीं रही। यह इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि 1961 में प्रधानमंत्री हयातो इकीडा की भारत यात्रा के बाद प्रधानमंत्री

के स्तर पर अगली यात्रा 1984 में यसुहिरो नाकासोन द्वारा की गई। भारत की ओर से प्रधानमंत्री के स्तर पर यात्राओं में श्रीमती इंदिरा गांधी (1969 एवं 1982), श्री राजीव गांधी (1985 एवं 1987) तथा पी वी नरसिम्हा राव (1992) की यात्राएं शामिल हैं। परंतु भारत के आर्थिक इतिहास में परिवर्तनकारी विकास 1980 के दशक के पूर्वार्ध में भारत ने सुजुकी मोटर कारपोरेशन का महत्वपूर्ण निवेश था जिससे आटोमोबाइल के क्षेत्र में क्रांति आ गई और भारत में उन्नत प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन के लोकाचार आए। भारत सरकार के काम को संपूरित करने तथा आर्थिक विकास में अंतर की भरपाई करने में मदद करने के लिए जापान की आधिकारिक विकास सहायता (ओ डी ए) भी लगातार मिलती रही। मित्र के रूप में जापान की विश्वसनीयता की 1991 में परख उस समय हुई जब जापान ऐसे कुछ देशों में शामिल था जिन्होंने भारत को भुगतान संकट के संतुलन से बाहर निकाला।

21वीं शताब्दी के शुरू में द्विपक्षीय संबंधों में नाटकीय बदलाव देखने को मिले। प्रधानमंत्री मोरी की वर्ष 2000 में महत्वपूर्ण भारत यात्रा के दौरान 21वीं शताब्दी में भारत - जापान वैश्विक साझेदारी शुरू की गई जो नई ऊंचाइयां छूने के लिए दोनों देशों के विकास पथ के लिए अपेक्षित वेग प्रदान करती है।

वैश्विक साझेदारी ने विविध क्षेत्रों में, जिसमें सामरिक समानताओं की पहचान करना शामिल है, संबंधों को सुदृढ़ करने की नींव प्रदान की। वर्ष, 2006 में प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह और प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे द्वारा हस्ताक्षरित संयुक्त वक्तव्य से उभरने वाली नई चुनौतियों में एक नया आयाम जुड़ गया तथा संबंध को प्रधानमंत्री के स्तर पर वार्षिक शिखर बैठक के प्रावधान के साथ वैश्विक एवं सामरिक साझेदारी के रूप में स्तरोन्नत किया गया। भारत और जापान के बीच एक व्यापक आर्थिक भागीदारी करार (सीईपीए) पर हस्ताक्षर 2011 में किए गए थे।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे के साथ 9वीं वार्षिक शिखर बैठक के लिए 30 अगस्त से 3 सितंबर, 2014 के दौरान जापान का दौरा किया। इस यात्रा की शुरूआत क्योटो से हुई। प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे प्रधानमंत्री मोदी की क्योटो में आगवानी की तथा उनके सम्मान में एक प्राइवेट डिनर दिया। यात्रा के दौरान, दोनों पक्षों ने संबंध को विशेष सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी के रूप में स्तरोन्नत करने का निर्णय तथा एक भारत - जापान निवेश संवर्धन साझेदारी शुरू की जिसके तहत जापान ने अगले पांच वर्षों में भारत में लगभग 35 मिलियन अमरीकी डालर निवेश करने की अपनी मंशा की घोषणा की।

प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के साथ आठवीं वार्षिक शिखर बैठक के लिए प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे ने 25 से 27 जनवरी, 2014 के दौरान भारत का आधिकारिक दौरा किया तथा वह नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड में हमारे मुख्य अतिथि थे। अपनी प्रतिबंधित बैठक एवं शिष्टमंडल स्तरीय वार्ता के बाद दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारत - जापान सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी को तीव्र करने पर अपने - अपने विजन को साझा करते हुए एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किया।

सम्राट अकिहितो तथा साम्राज्ञी मिचिको ने 30 नवंबर से 6 दिसंबर, 2013 के दौरान भारत की एक सप्ताह की यात्रा की। दिल्ली में उनकी आधिकारिक भागीदारियों के तहत राजघाट, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, लोदी गार्डन का दौरा; उप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं लोक सभा में प्रतिपक्ष की नेता द्वारा मुलाकात शामिल थी। राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने उनके सम्मान में दावत दी। चेन्नई में, सम्राट एवं साम्राज्ञी कला क्षेत्र फाउंडेशन, घुंडी नेशनल पार्क तथा स्पाटिक सोसायटी ऑफ तमिलनाडु देखने गए। तमिलनाडु के राज्यपाल ने उनके सम्मान में लंच दिया।

विदेश मंत्री के स्तर पर 8वीं सामरिक वार्ता का आयोजन 17 जनवरी, 2015 को नई दिल्ली में हुआ। दोनों विदेश मंत्रियों ने द्विपक्षीय सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी के सभी पहलुओं की समीक्षा की तथा आपसी हित के क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की। अगली वार्ता टोकियो में होनी है। विदेश एवं रक्षा सचिवों के स्तर पर 2+2 द्विपक्षीय वार्ता के साथ ही 6 अप्रैल 2015 को नई दिल्ली में जापान के उप विदेश मंत्री श्री शिंसुके सुगियामा तथा विदेश सचिव डा. एस जयशंकर के बीच द्विपक्षीय विदेश कार्यालय परामर्श का भी आयोजन हुआ। जापान के अतिथि उप विदेश मंत्री अकीताका सैकी ने 9 जून 2015 को विदेश सचिव डा. एस जयशंकर के साथ भी बातचीत की।

माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिह के नेतृत्व में एक भारतीय शिष्टमंडल ने सेंडई, जापान में 14 से 16 मार्च 2015 के दौरान आपदा जोखिम कटौती पर आयोजित तीसरे विश्व सम्मेलन (डब्ल्यू सी डी आर आर) में भाग लिया। माननीय गृह मंत्री ने 14 मार्च 2015 को सम्मेलन में हिंदी में कंट्री स्टेटमेंट दिया। उन्होंने "आपदा जोखिम कटौती के लिए 2015 पश्चात रूपरेखा के समर्थन में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग" पर मंत्री स्तरीय गोलमेज की अध्यक्षता भी की तथा सम्मेलन के दौरान अतिरिक्त समय में आयोजित एशियाई नेता बैठक की सह अध्यक्षता की।

रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रिकर ने 30 मार्च को अपने समकक्ष जनरल नकातानी के साथ वार्षिक रक्षा मंत्री वार्ता में भाग लेने के लिए 30 और 31 मार्च को जापान का दौरा किया। दोनों नेताओं ने एक दूसरे के देश में सुरक्षा नीतियों में हाल के परिवर्तनों पर विचारों का आदान प्रदान किया तथा 23 मार्च को टोकियो में आयोजित रक्षा उपकरण एवं प्रौद्योगिकी अंतरण पर पहले जे डब्ल्यू डी का स्वागत किया। माननीय रक्षा मंत्री ने भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए मेक इन इंडिया अभियान के आलोक में भारत और जापान के बीच रक्षा सहयोग बढ़ाने का भी आह्वान किया।

भारत और जापान के बीच संसदीय विनिमय कार्यक्रम के तहत भारतीय उद्योग परिसंघ (सी आई आई) के सहयोग से सासाकावा शांति प्रतिष्ठान (एस पी एफ) वर्ष 2004 से संसद सदस्यों की यात्राओं का आयोजन करता रहा है। इस आदान - प्रदान के तहत अब तक 2004 से 2014 के बीच 11 संसदीय शिष्टमंडलों ने जापान का दौरा किया है। वर्ष 2005 में फिक्की द्वारा भारत -

जापान संसद सदस्य मंच (आई जे एफ पी) का गठन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत अब तक दो संसदीय शिष्टमंडलों ने 2005 से 2011 के बीच जापान का दौरा किया है। संसदीय कार्य मंत्रालय ने 26 जनवरी से 2 फरवरी, 2011 के दौरान संसद सदस्यों के एक शिष्टमंडल को जापान भेजा। संसद सदस्यों के एक शिष्टमंडल के साथ लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने जापानी डायट के नेताओं के संयुक्त निमंत्रण पर 2 से 6 अक्टूबर, 2011 के दौरान जापान का दौरा किया।

आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोग

आर्थिक क्षेत्र में दोनों देशों के बीच संपूरकताएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। (i) जापान की वृद्ध होती आबादी (23 प्रतिशत 65 साल से अधिक आयु के) तथा भारत का गतिशील युवा वर्ग (50 प्रतिशत से अधिक 25 साल की आयु से कम); (ii) भारत के समृद्ध प्राकृतिक एवं मानव संसाधन तथा जापान की उन्नत प्रौद्योगिकी; (iii) भारत की सेवाओं के क्षेत्र में शक्तिशाली स्थिति और विनिर्माण के क्षेत्र में जापान की उत्कृष्टता; और (iv) निवेश के लिए जापान की अतिरेक पूंजी तथा मध्यम वर्ग की वजह से भारत के विशाल एवं बढ़ते बाजार।

एशिया की दो अर्थव्यवस्था के बीच विद्यमान स्पष्ट संपूरकताओं को देखते हुए भारत और जापान के बीच आर्थिक संबंधों में विकास की प्रचुर संभावनाएं मौजूद हैं। अनेक कारणों की वजह से भारत में जापान की रूचि बढ़ रही है जिसमें भारत का विशाल एवं बढ़ता बाजार तथा इसके संसाधन, विशेष रूप से मानव संसाधन शामिल हैं। ऐतिहासिक भारत - जापान व्यापक आर्थिक साझेदारी करार (सी ई पी ए) पर हस्ताक्षर तथा अगस्त, 2011 से इसके कार्यान्वयन से दोनों देशों के बीच व्यापार, आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों के विकास की गति और तेज होने की उम्मीद है।

जापान की आधिकारिक विकास सहायता जो लंबे समय से द्विपक्षीय संबंधों का आधार रही है, आज भी भारत के अवसंरचना विकास के लिए दीर्घावधिक ऋण प्रदान कर रही है। नई दिल्ली मेट्रो नेटवर्क जापान की सहायता से साकार हुआ है, जिसने प्रतिष्ठित दिल्ली मेट्रो परियोजना की संकल्पना तैयार करने तथा निष्पादित करने में मदद की है। पश्चिमी समर्पित फ्रेट कोरिडोर (डी एफ सी), आठ नए औद्योगिक कस्बो के साथ दिल्ली - मुंबई औद्योगिक कोरिडोर, चेन्नई - बंगलुरू औद्योगिक कोरिडोर (सी बी आई सी) निर्माणाधीन मेगा परियोजनाएं हैं जो अगले दशक में भारत को बदल कर रख देंगी।

वित्त वर्ष 2013-14 में, भारत - जापान द्विपक्षीय व्यापार 16.31 बिलियन अमरीकी डालर पर था, जो पिछले वित्त वर्ष में 18.51 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 11.89 प्रतिशत कम है। कुल व्यापार में गिरावट मुख्य रूप से जापान के निर्यात में 23.53 प्रतिशत की कमी की वजह से है। तथापि, 2013-14 में भारत के निर्यात में 4.36 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत - जापान द्विपक्षीय व्यापार का शेयर जापान के कुल विदेश व्यापार के 1 प्रतिशत के आसपास

मंडरा रहा है जबकि पिछले दो वर्षों में यह भारत के कुल व्यापार के 2.2 से 2.5 प्रतिशत की रेंज में था। अप्रैल से दिसंबर, 2014 की अवधि के दौरान कुल द्विपक्षीय व्यापार 12.11 बिलियन अमरीकी डालर था।

भारत की ओर से जापान को जिन वस्तुओं का निर्यात किया जाता है उनमें मुख्य रूप से पेट्रोलियम उत्पाद, रसायन, एलीमेंट, कंपाउंड, गैर मेटलिक मिनरल वेयर, मछली एवं मछली के पकवान, मेटफेरस अयस्क एवं स्क्रैप, कपड़ा एवं असेसरीज, लोहा एवं इस्पात के उत्पाद, टेक्सटाइल यार्न, फेब्रिक एवं मशीनरी आदि शामिल हैं।

भारत में जापान का विदेशी प्रत्यक्ष निवेश भारी सौदों, विशेष रूप से डायची सैंक्यो द्वारा रैनबैक्सी के अधिग्रहण की वजह से घातांकी रूप में बढ़ा है और यह वर्ष 2004 में 139 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर वर्ष 2008 में 5551 मिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया जो अब तक का सर्वाधिक है। परवर्ती वर्षों में भारत में समग्र एफ डी आई को देखते हुए भारत में जापान के विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में गिरावट की रूझान रही है। तथापि, वर्ष 2012 में, भारत में जापान के एफ डी आई में वर्ष 2011 की तुलना में 19.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई और 2786 मिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया, हालांकि यह वर्ष 2012 में जापान के समग्र एफ डी आई बहिर्प्रवाह का 2.3 प्रतिशत था। वर्ष 2013 में एफ डी आई 22.64 प्रतिशत की गिरावट आई जो जापान के कुल एफ डी आई बहिर्प्रवाह का 1.6 प्रतिशत है। भारत में जापान से एफ डी आई जनवरी, से दिसंबर, 2014 के दौरान 1.7 बिलियन अमरीकी डालर थी। जापान की एफ डी आई मुख्य रूप से आटोमोबाइल, इलेक्ट्रिकल उपकरण, दूर संचार, रसायन एवं फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में है।

पिछले वर्षों में भारत में जापान से संबद्ध कंपनियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। भारत में जापानी कंपनियों की उपस्थिति निरंतर बढ़ रही है। दिसंबर 2014 तक की स्थिति के अनुसार भारत में पंजीकृत जापानी कंपनियों की संख्या 1209 है जो 2013 के आंकड़ों की तुलना में 13 प्रतिशत अधिक है। भारत में प्रचालन करने वाले जापानी व्यवसायों के स्थापना की कुल संख्या 3961 थी जो पिछले साल की तुलना में 56 प्रतिशत अधिक है।

जापान वर्ष 1958 से भारत को द्विपक्षीय ऋण एवं अनुदान सहायता प्रदान कर रहा है। जापान भारत के लिए सबसे बड़ा द्विपक्षीय दाता है। जापान की ओ डी ए सहायता विशेष रूप से प्राथमिकता वाले क्षेत्रों जैसे कि विद्युत, परिवहन, पर्यावरण परियोजनाओं तथा बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं से जुड़ी परियोजनाओं में आर्थिक विकास की गति तेज करने के लिए भारत के प्रयासों को संपूरित करती है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं सांस्कृतिक सहयोग

भारत एवं जापान के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग करार पर हस्ताक्षर 29 नवंबर, 1985

को दोनों सरकारों की ओर से नोडल एजेंसी के रूप में जापान के विदेश मंत्रालय तथा भारत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के बीच किया गया। वर्ष 1993 में भारत - जापान विज्ञान परिषद (आई जे एस सी) की स्थापना के बाद सहयोग ने गति पकड़ी तथा आई जे एस सी की अब तक 17 वार्षिक बैठकें हो चुकी हैं। आईजेएससी के तहत परस्पर सहयोग से अनुसंधान परियोजना, सत्र, शैक्षिक सेमिनार, दोनों देशों के वैज्ञानिकों द्वारा अन्वेषणात्मक यात्राएं तथा रमन - मिजुशिमा व्याख्यान माला शामिल हैं। सहयोग की परियोजनाओं के तहत बुनियादी विज्ञान में अनुसंधान के लिए प्राथमिकता वाले 6 विषयों की पहचान की गई।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा जे एस टी के बीच नई विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पहल के तहत एक अन्य महत्वपूर्ण सहयोग विषय आधारित गतिविधि है। शुरूआती विषय सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई सी टी) थी जिसके तहत 2006 से 2012 के दौरान अनेक परियोजनाओं के लिए सहायता प्रदान की गई। जेएसटी - डी एस टी सहयोग के लिए वर्तमान विषय जैव चिकित्सा अनुसंधान है। दोनों देशों के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग करार के तहत एम ई एक्स टी एवं डी एस टी ने प्रधानमंत्री शिंजो आबे की भारत यात्रा के दौरान 25 जनवरी, 2014 को कार्यान्वयन व्यवस्था पर हस्ताक्षर किया है।

29 अक्टूबर, 1956 को भारत और जापान के बीच एक सांस्कृतिक करार पर हस्ताक्षर किया गया जो 24 मई, 1957 को लागू हुआ। वर्ष 1951 में, भारत में पढ़ाई करने के लिए जापान के युवा छात्रों के लिए एक छात्रवृत्ति प्रणाली स्थापित की। प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने भारत महोत्सव के उद्घाटन समारोह में अप्रैल, 1988 में भाग लिया। वर्ष 2012 भारत और जापान के बीच राजनीतिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ थी। टोकियो में विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र का उद्घाटन 25 सितंबर, 2009 को आई सी सी आर के अध्यक्ष की यात्रा के दौरान किया गया। यह केंद्र योग, तबल, भरतनाट्यम, ओडिसी, संबलपुरी, बालीवुड नृत्य तथा हिंदी एवं बंग्ला भाषाओं में कक्षाएं चलाता है।

भारत के प्रधानमंत्री की जापान यात्रा के दौरान, जापान में वर्षभर चलने वाले भारत महोत्सव 2014-15 की घोषणा की गई। इस महोत्सव का औपचारिक उद्घाटन भारत के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री श्रीपद येस्सो नायक तथा जापान के भूमि, अवसंरचना, परिवहन एवं पर्यटन मंत्री श्री अकिहिरो ओहता द्वारा 27 अक्टूबर, 2014 को किया गया। अक्टूबर में आयोजित नृत्य महोत्सव के तहत भारत से भरतनाट्यम, मणिपुरी, कोडियट्टम और मोहिनीअट्टम नृत्य मंडलियों द्वारा जापान के 20 शहरों में 20 से अधिक परफार्मेंस शामिल थे। इस महोत्सव के अंग के रूप में जापान के आंतरिक कार्य एवं संचार राज्य मंत्री श्री कासाबुरो निशिमे के साथ मिलकर माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने 16 मार्च 2015 को टोकियो के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संग्रहालय में बौद्ध कला की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम के तहत अन्य कार्यक्रमों में बौद्ध पांडुलिपियों पर एक गोष्ठी, खाद्य महोत्सव तथा भारत - जापान साहित्यिक महोत्सव शामिल थे।

भारतीय समुदाय

व्यवसाय एवं वाणिज्यिक हितों के लिए जापान में भारतीयों के पहुंचने की शुरूआत 1870 के दशक में याकोहामा एवं कोबे के दो प्रमुख खुले बंदरगाहों पर शुरू हुई। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अधिक भारतीय जापान में प्रवेश किए जब जापान के उत्पादों को मांग में अंतर को पाटने के लिए मंगाया गया जिसे युद्ध से त्रस्त यूरोप पूरा नहीं कर पा रहा था। 1923 में, भंयकर कांटो भूकंप के बाद याकोहामा में रहने वाले अधिकांश भारतीय वहां से छोड़कर कंसाई क्षेत्र (ओसाका - कोबे) चले गए तथा आज इस शहर में जापान में सबसे अधिक संख्या में प्रवासी भारतीय रहते हैं। याकोहामा के प्राधिकारियों ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कांटो में अपने पुराने बेस को फिर से जिंदा करने के लिए भारतीय समुदाय को विशेष प्रोत्साहन की पेशकश की। जापान में पुराने भारतीय समुदाय ने टेक्सटाइल, पण एवं इलेक्ट्रानिक्स के व्यापार पर अपना ध्यान केंद्रित किया। भारत के साथ घनिष्ठ संबंधों तथा हांगकांग एवं शंघाई के साथ रिश्तों की वजह से वे पूरे एशिया में व्यापारिक गतिविधियों के प्रमुख खिलाड़ी बन गए। भारतीय समुदाय का एक नया वर्ग रत्न एवं जवाहरात का काम कर रहा है। भारतीय समुदाय ने 1929 में याकोहामा में भारतीय सौदागर संघ (आई एम ए वाई) का गठन किया।

हाल के वर्षों में, भारी संख्या में पेशेवरों के पहुंचने की वजह से भारतीय समुदाय की संरचना में बदलाव आ गया है। इनमें आईटी प्रोफेशनल तथा इंजीनियर शामिल हैं जो भारत एवं जापान की फर्मों के लिए काम कर रहे हैं तथा इसके तहत प्रबंधन, वित्त, शिक्षा तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान में पेशेवर काम कर रहे हैं जिन्हें बहुराष्ट्रीय संगठनों के अलावा भारतीय एवं जापानी संगठनों द्वारा नियुक्त किया गया है। टोकियो में निशिकसाई क्षेत्र लघु भारत के रूप में उभर रहा है। यह समुदाय कई तरह की सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों में शामिल है। यह समुदाय अपनी मातृभूमि के साथ अपने संपर्क को बनाए हुए है तथा अपने जापानी पड़ोसियों के साथ संपर्क को भी बढ़ावा देता है। उनकी संख्या में वृद्धि की वजह से टोकियो एवं याकोहामा में दो भारतीय स्कूल खोलने की आवश्यकता उत्पन्न हुई। यह समुदाय दूतावास द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में सक्रियता से भाग लेता है। भारतीय समुदाय अपने पड़ोसियों के साथ सामंजस्यपूर्ण ढंग से रहता है तथा जापानी समुदाय का बहुमूल्य सदस्य बनने के लिए स्थानीय शासनों के साथ संबंधों का विकास किया है।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, टोकियो की वेबसाइट :
http://www.indembassy-tokyo.gov.in/
भारतीय दूतावास, टोकियो का फेसबुक पृष्ठ :
https://www.facebook.com/embassyofindiatokyo

***

जुलाई, 2015